2 जुलाई 2019, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2018-20

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 42, अंक : 7 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
जुलाई (प्रथम), 2019 (वीर नि.संवत्-2545) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

न्यूजर्सी एवं मयामी (U.S.A.) में श्रुतपंचमी

न्यूजर्सी – यहाँ श्रुतपंचमी के प्रसंग पर 5 जून को प्रात: विशेष रूप से जिनवाणी पूजन एवं सायंकाल डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के श्रुतपंचमी पर प्रासंगिक प्रवचन का लाभ मिला।

मयामी – यहाँ इस प्रसंग पर दिनांक 9 जून को **डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर** के निर्देशन में षट्खण्डागम/श्रुतपंचमी विधान (लेखक-पंडित अभयजी देवलाली) का आयोजन हुआ। आपके द्वारा विशेष रूप से इस पर्व संबंधी अनेक पहलुओं को उजागर करते हुए जिनवाणी माँ का जन्मदिन (श्रुतपंचमी पर्व) मनाया गया।

ज्ञातव्य है कि दोनों स्थानों पर सैंकड़ों बन्धुओं को इस श्रुतपंचमी पर्व की खबर भी नहीं थी। न्यूजर्सी के कार्यक्रम श्री हिमांशुभाई एवं मयामी के कार्यक्रम श्री महेन्द्रभाई के संचालन में संपन्न हुये।

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न

हिंगोली (महा.) – यहाँ श्री 1008 शांतिनाथ दिगम्बर जैन ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 30 मई से 2 जून तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री समयसार मंडल विधान, श्री प्रवचनसार मंडल विधान एवं श्री तत्त्वार्थसूत्र मंडल विधान संपन्न हुए।

शिविर में डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ एवं पण्डित संजयजी राउत द्वारा तीनों समय प्रवचनों का लाभ मिला। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल द्वारा हुये।

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा
श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर में

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त से रविवार 11 अगस्त, 2019 तक)

शिविर में पधारने हेतु आप सभी सपरिवार
सादर आमंत्रित हैं।

विस्तृत सूचना पृष्ठ 5 पर है।

ग्रुप शिविर सानन्द संपन्न

भिण्ड (म.प्र.) – यहाँ श्री कुन्दकुन्द स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अ. भा. जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में दिनांक 7 से 16 जून तक 15वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

यह शिविर मध्यप्रदेश के भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, टीकमगढ, गुना तथा उत्तरप्रदेश के इटावा, मैनपुरी, फिरोजाबाद, झांसी, ललितपुर आदि जिलों के 62 स्थानों पर एक साथ आयोजित हुआ।

शिविर में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर से 57, श्री अकलंक शिक्षण संस्थान बांसवाड़ा से 21, श्री आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय कोटा से 16, ब्रह्मचारी व विदुषी बहन तथा स्वाध्यायी विद्वान 9, स्नातक विद्वान 15 एवं स्थानीय विद्वान 66 - इसप्रकार कुल 184 विद्वानों का लाभ प्राप्त हुआ। सभी स्थानों पर प्रतिदिन सामूहिक पूजन, जिनेन्द्र भक्ति, शिविर कक्षाएं, प्रवचन, प्रौढ कक्षाएं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। शिविर में लगभग 7833 बच्चों सहित 10 हजार से अधिक साधर्मियों ने लाभ लिया। शिविर का निर्देशन पण्डित अनिलजी शास्त्री एवं संयोजन श्री पुष्पेन्द्रजी जैन ने किया।

दशलक्षण पर्व हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र भेजें

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा दशलक्षण पर्व पर प्रवचनार्थ जाने वाले सभी विद्वानों से अनुरोध है कि वे इस वर्ष भी दशलक्षण पर्व में जाने हेतु अपनी स्वीकृति शीघ्र जयपुर कार्यालय को पत्र/फोन/ई-मेल द्वारा भेजें। यद्यपि सभी विद्वानों को जयपुर कार्यालय से अनुरोध पत्र डाक, एस.एम.एस./वॉट्सएप द्वारा भेजे जा रहे हैं; परन्तु यदि डाक की गड़बड़ी से समय पर न मिले हो तो भी अपनी स्वीकृति हमें शीघ्र नोट करा देवें। **- महामंत्री**

स्वीकृति भेजने का पता - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.)** 302015 **फोन नं.-0141-2705581, 2707458,**
मो. 9785645793 (नीशू जैन)
E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

सम्पादकीय –

भारतीय संस्कृति के विकास में जैनधर्म का योगदान

1

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

भारत विविध वर्गों, समाजों, सम्प्रदायों और जातियों का ऐसा बृहद बगीचा है; धार्मिक, सामाजिक रीति-रिवाजों, पुरातन परम्पराओं की ऐसी चित्र-विचित्र वाटिका है, जिसमें नाना संस्कृतियों के रंग-बिरंगे फूल खिलते रहे हैं, खिल रहे हैं और खिलते रहेंगे।

भारतीय जन-जीवन में धर्म और अध्यात्म के क्षेत्र में पुरातन परम्परागत मूलतः दो संस्कृतियों का बाहुल्य रहा है। एक श्रवण संस्कृति और दूसरी वैष्णव (वैदिक) संस्कृति। श्रमण संस्कृति में वर्तमान में भारत में मात्र जैन संस्कृति ही अधिक फूल-फल रही है; क्योंकि इसके नैतिक मूल्य 'अहिंसा परमोधर्मः' के सिद्धान्त पर आधारित हैं तथा जैनधर्म का मूल आधार अध्यात्म और अहिंसा है।

धार्मिक संस्कृतियाँ और सामाजिक संस्कृतियाँ एक दूसरे से सम्बन्धित हैं। धार्मिक सिद्धान्त ही पूर्व परम्पराओं और आचार-विचार को संस्कारित करते हैं। ये परिष्कृत परम्परायें और आचार-विचार ही सभ्यता और संस्कृतियों के जनक होते हैं। ये सामाजिक संस्कृतियाँ और पारम्परिक रीति-रिवाज धार्मिक विचारों की भावभूमि पर ही आधारित होते हैं, धार्मिक भावनाओं का ही अनुसरण करते हैं। इस कारण इन्हें एक दूसरे से पृथक् नहीं किया जा सकता।

यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य और सामाजिक सत्य है कि जब दो भिन्न सामाजिक संस्कृतियाँ, भिन्न-भिन्न जातियाँ अथवा भिन्न-भिन्न धर्मों को माननेवाले परिवार एक ही मौहल्ले में पास-पड़ौस में साथ-साथ रहते हैं तो वे एक-दूसरे को प्रभावित किए बिना नहीं रहते। जैनों के मौहल्ले में रहनेवाले जैनेतर समाज भी जैनों के आकर्षक धार्मिक एवं समाजिक कार्यक्रमों में भाग लेने लगते हैं, जैनों के शुद्ध-सात्विक खान-पान और आचार-विचार से प्रभावित होकर दिन में खाने लगते हैं, पानी छानकर पीने लगते हैं। अभक्ष्य आहार और अनैतिक व्यवहार का भी त्याग कर देते हैं तथा ब्राह्मणों के मौहल्ले में रहनेवाले मुस्लिम भाई भी दशहरा-दिवाली मनाने लगते हैं।

यह तो हुई संस्कृति, सभ्यता और पारम्परिक रीति-रिवाजों के उद्भव और विकास की बात; जो सभी वर्गों, जातियों और सम्प्रदायों में अपने-अपने धार्मिक सिद्धान्तों के अनुसार पनपती है, और विकसित होती हैं।

आज हमारा विचारणीय मूल मुद्दा यह है कि जैनधर्म का भारतीय संस्कृति को क्या प्रदेय है – इस विषय को जानने के लिए हमें जैनधर्म का व्यवहारिक पक्ष देखना होगा। जैनधर्म न केवल जैनसमाज तक ही सीमित है; बल्कि यह धर्म विश्वधर्म है, यह धर्म सार्वजनिक है, सार्वभौमिक है और सार्वकालिक है – ऐसा कोई देश नहीं, ऐसा कोई काल नहीं, ऐसा कोई व्यक्ति नहीं, जो जैनधर्म के व्यवहारिक और सैद्धान्तिक पक्ष से प्रभावित न हो, सहमत न हो; क्योंकि जैनधर्म मूलतः जैनदर्शन के चार महान सैद्धान्तिक स्तम्भों पर खड़ा है। वे चार स्तम्भ हैं – अहिंसा, अनेकान्त, स्याद्वाद और अपरिग्रह।

जैनों के आचरण में अहिंसा, विचारों में अनेकान्त, वाणी में स्याद्वाद और व्यवहार में अपरिग्रह का सिद्धान्त समाया हुआ है। यहाँ अनेकान्त व स्याद्वाद जैसे दार्शनिक सूक्ष्म सिद्धान्तों की चर्चा तो संभव नहीं है; परन्तु अहिंसा एवं अपरिग्रह सिद्धान्तों का भी भारतीय संस्कृति के लिए भी बहुत कुछ प्रदेय है, जिसकी संक्षिप्त चर्चा ही अभी यहाँ की जा सकती है।

जैनों की अहिंसा न केवल मानव के प्राणघात न करने तक ही सीमित है, बल्कि किसी भी जीव को, प्राणी मात्र को न सताना, न दुःख पहुँचाना तथा अपने आत्मा में भी किसी के प्रति राग-द्वेष न रखना 'अहिंसा' के व्यापक क्षेत्र में शामिल है; क्योंकि झूठ, चोरी आदि से भी दूसरों के प्राण पीड़ित होते हैं। यही कारण है कि आचार्य अमृतचन्द्र ने झूठ, चोरी, कुशील और विषयभोग की सामग्री के अनुचित संग्रह को भी हिंसा पाप में ही सम्मिलित करके इनके त्याग को अहिंसा का व्यापक स्वरूप दर्शाया है।

अब हमें देखना यह है कि जैनधर्म के कौन-कौन से सिद्धान्तों का, संस्कृतियों और परम्पराओं का सम्पूर्ण भारतीय समाज को क्या-क्या प्रदेय रहा है तथा वर्तमान परिस्थितियों में किन माध्यमों से किन सिद्धान्तों से और क्या योगदान हो सकता है?

राजनैतिक प्रदेय – हम इस अवसर पर भारत के उस आजादी के इतिहास को स्मरण करें, जिसमें एकमात्र अहिंसा ने यह कमाल कर दिया। महात्मा गाँधी ने जिस अहिंसा के अस्त्र से अंग्रेजों के छक्के छुड़ा दिये, वह अहिंसा जैनधर्म की ही अहिंसा है, जिसमें कहा गया था कि हमें गोली का जवाब गाली से भी नहीं देना है।

इसतरह हम देखते हैं कि महात्मा गाँधी की वह अहिंसा और जवाहरलाल नेहरू के वे पंचशील सिद्धान्त और महामना मदनमोहन मालवीय का वह नारा, जिसमें कहा गया था कि स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ये सब किसी न किसी रूप में जैनधर्म के ही प्रदेय हैं।

जैनधर्म में तो यहाँ तक कहा गया है कि स्वतंत्रता हमारा अनादिसिद्ध अधिकार है। जैनधर्म न केवल नर से नारायण बनानेवाला दर्शन है; बल्कि यह तो पशु से परमात्मा बनानेवाला दर्शन है। यह तो यह कहता है कि स्वभाव से तो हम सभी कारण परमात्मा हैं ही, यदि अपनी शक्ति को, अपने स्वभाव को जान ले, पहचान ले तो हम प्रगट पर्याय में भी परमात्मा बन सकते हैं। भगवान पार्श्वनाथ ने परमात्मा बनने की प्रक्रिया हाथी की पर्याय में प्रारम्भ की थी और भगवान महावीर ने सिंह की पर्याय में।

साहित्यिक प्रदेय – किसी भी संस्कृति, सभ्यता और सिद्धान्त का प्रचार-प्रसार करने का सर्वाधिक प्रबल साधन उसका सत्साहित्य होता है। जैनधर्म का भी आचार्यों द्वारा प्रणीत अनेक भाषाओं में प्रचुर सत्साहित्य उपलब्ध है और समय-समय पर वह विस्तृत टीकाओं, व्याख्याओं के साथ प्रकाशित भी होता रहता है, वर्तमान विद्वानों द्वारा लिखे गये मौलिक सत्साहित्य द्वारा भी जैन सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार होता रहता है। यही कारण है कि प्रबुद्ध जैनेतर पाठक वर्ग भी जैन सिद्धान्तों का, जैनाचार विचारों की ओर इसके व्यवहारिक पक्ष का हृदय से प्रशंसक रहा है। तथा यथासंभव अपने आचरण में लाने का प्रयास भी करता है।

कोई कह सकता है कि वर्तमान के भौतिकवादी, भोगवादी इस अर्थप्रधान हिंसक युग में क्या हुआ आपके उन सिद्धान्तों का? आज जैनेतरों की तो बात ही क्या कहें जैन भी हिंसा और परिग्रह की पराकाष्ठा का उल्लंघन करते पाये जा रहे हैं? उनसे हम एक कहानी के माध्यम से मात्र इतना कहना चाहते हैं कि एक बार बड़वाग्नि से समुद्र अकड़ कर बोला – 'तू मेरे भीतर अनादिकाल से जल रही है, पर क्या बिगाड़ लिया तूने मेरा? मैं तो तेरी छाती पर वैसा ही लवालव भरा हुआ अपने ज्वार-भाटों द्वारा अठखेलियाँ कर रहा हूँ?'

बड़वाग्नि ने विनम्रभाव से कहा – जिसके ऊपर समुद्रों पानी पड़ा हो; फिर भी जो अनादि से अपने अस्तित्व को कायम रखकर उस अथाह और अपार समुद्र की नाक में नकेल डालकर उसपर नियंत्रण कर रही हो; उसे अपनी मर्यादा में रखें हो, मर्यादा का उल्लंघन न करने दे रही हो, उसके अस्तित्व और शक्ति के लिए यह क्या कम है?

ठीक इसीप्रकार इस भौतिकवादी, भोगवादी और अर्थप्रधान युग में भी जैनधर्म अपना अस्तित्व कायम किए हुए हैं और करोड़ों व्यक्तियों को अपने आचार-विचार और अहिंसा आदि के सिद्धान्तों से नियंत्रित किये रहता है, उसके प्रदेय के लिए यह क्या कम है।

भले ही व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत कमजोरी के कारण सम्पूर्ण रूप से अहिंसक आचरण नहीं कर पाता हो, व्यसनों का त्याग न कर पाता हो, अपरिग्रह के सिद्धान्त को पूरी तरह न अपना पाता हो, तथापि सिद्धान्त रूप से तो प्रायः सभी जैनाचार और जैन सिद्धान्तों के प्रशंसक ही हैं।

जैनसमाज की समृद्धि का कारण भी जैन आचरण ही है; वह कितना भी खर्च करे; शुद्ध-सात्विक शाकाहारी दाल-रोटी में कितना खर्च होगा? दूध-घी में डूबा भी रहे तो भी मांसाहार और शराब के साथ जिसे रंगरेलियों के लिए सुन्दरियाँ भी चाहिए, उनकी तुलना में तो वह खर्च कुछ भी

(शेष पृष्ठ 7 पर...)

आचार विचार संस्कार

ARHAM PATHSHAALA

महावीर के संदेशों को घर-घर तक पहुँचायेगें

अर्हं पाठशाला

पण्डित टोडरमल मुक्त विद्यापीठ जयपुर द्वारा संचालित

अब ऑनलाईन
जैन पाठशाला
घर-घर तक
जन-जन तक

5 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के लिए

प्रवेश प्रारम्भ

रजिस्टर करें

सीमित स्थान

आप सीखेंगे

- जैनधर्म के मूलभूत सिद्धांतों को
- जैन सिद्धांतों का प्रायोगिक ज्ञान
- जीवन जीने की कला
- महापुरूषों का जीवन चरित्र
- नैतिकता
- सदाचरण
- चरित्र-निर्माण
- तनाव मुक्त जीवन

फॉर्म हेतु सम्पर्क करें :- 8058890377

मुख्य आकर्षण

त्रैमासिक पाठ्यक्रम

- ★ विशेषज्ञ विद्वानों द्वारा कक्षाऐं
- ★ पॉवर पाईण्ट प्रेजेन्टेशन
- ★ जूम एप द्वारा ऑनलाईन लाइव वीडियो कक्षाऐं
- ★ 6 भाषाओं में कक्षाऐं (हिन्दी, अंग्रेजी, मराठी, गुजराती, कन्नड़, तमिल)
- ★ विश्व भर में कक्षाओं का संचालन
- ★ समस्या समाधान सत्र
- ★ प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक सभी जैन पाठ्यकम उपलब्ध

प्रवेश शुल्क 300/- मात्र

DIRECTOR — एस. पी. भारिल्ल, विश्व प्रसिद्ध वक्ता; डॉ. संजीव गोधा, अन्तरराष्ट्रीय जैन विद्वान

CO-DIRECTOR — पीयूष शास्त्री, प्रसिद्ध जैन विद्वान

Chief Executive	Co-ordinator	In-charge	Executive
प्रतीति पाटील	आकाश शास्त्री 8770845953	जिनेन्द्र शास्त्री 9571955276	अर्पित शास्त्री 6350509218

E-learning of Mokshmarg

पधारिये ! अवश्य पधारिये !!

हार्दिक आमंत्रण

तत्त्वज्ञान का लाभ लीजिये!!!

पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट, जयपुर द्वारा
श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर में

42वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

(शुक्रवार, दिनांक 2 अगस्त से रविवार 11 अगस्त, 2019 तक)

–: विद्वत्समागम :–

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल

पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल

ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना

ब्र. यशपालजी जैन, जयपुर

पण्डित अभयजी शास्त्री, देवलाली

डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, जयपुर

डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, जयपुर

डॉ. प्रवीणजी शास्त्री, बांसवाड़ा

आदि अनेक विशेषज्ञ विद्वानों के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ प्राप्त होगा।

आप सपरिवार इष्टमित्रों सहित पधारकर तत्त्वज्ञान का लाभ लेवें।

नोट :– अपने पधारने की पूर्व सूचना अवश्य देवें, ताकि आवास आदि की समुचित व्यवस्था हो सके।

स्थान एवं सम्पर्क सूत्र

ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन : 0141–2705581, 2707458 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com; Website : www.ptst.in

पद्यात्मक विचार बिन्दु

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

प्रस्तुत पदों में हमारे विचारों, आचरण और व्यवहार में पायी जाने वाली विसंगतियों की ओर ध्यान दिलाते हुए कुछ ऐसे विचार बिन्दु प्रस्तुत किये गये हैं, जिन पर यदि गंभीरतापूर्वक गहराई से विचार किया जाये तो न सिर्फ हमारी विचारधारा में आमूलचूल परिवर्तन होगा वरन् निश्चित ही हमारे कल्याण का मार्ग प्रशस्त होगा। विचारशील पाठकों से अपेक्षा है कि इसका लाभ अवश्य लेंगे। अगले कुछ अंकों तक यह क्रम जारी रहेगा।

इक बार फिर गुरु देशना का, गहराई से तू विचार कर
शास्त्र सम्मत युक्तिसंगत, जानकर स्वीकार कर
दृढता तो आती है तभी, बनता अटल सुविचार है
बस यही दृढता है जरूरी, सब इसके बिना बेकार है।।१२१।।

पहिचानता है समकिती ही, सम्यग्दृष्टि जीव को
संगम यही संसार का वा, मोक्षमारग का अहो
समकिती का आचार जग को, विचित्र अटपटासा लगे
है सिद्धसम श्रद्धान उनका, पर जगम में रमता दिखे।।१२२।।

क्षायिक सम्यग्दृष्टि थे यद्यपि भरत राज चक्रेश्वर
श्रद्धान सिद्धों सा जनम से, तथापि गृहस्थ भरतेश्वर
सभी तरह के भोग भोगते, अतिशयोक्तिसम भाषित हो
असंख्यातगुनी निर्जरा उनके, भोगकाल में जारी हो।।१२३।।

इस तरह बाह्य व्यवहार से, बस क्षीणबंधन लोक में
श्रद्धा यदि विपरीत हो, आतम भ्रमे संसार में
स्पष्ट है तन की क्रिया में, धरम का है लेश ना
आतम धरम हो आत्म में, आतमधरम तन में कहाँ।।१२४।।

दिन रात करता चिंतवन, इस मनुज जीवन के लिये
झोंक डाला स्वयं को, इसको रिझाने के लिये
कुछ वर्ष का यह मनुज जीवन, आतमा तिरकाल है
त्रिकाल का न विचारकर तू, आज में बेहाल है।। १२५।।

दृष्टि का जो विषय है, कैसा है वो निज आतमा
परद्रव्य से वो सर्वथा है, पृथक केवल आतमा
अन्य अनन्तों आतमा से, जिसका न सारोकार है
निज में ही स्थित भेद विरहित, यह स्वयं अविकार है।।१२६।।

उपरांत समकित के अरे, यह जीव घर में ही रहे
भोगे विषय संसार के, व्यापार आदिक भी करे
अनाचार–अनीति–अन्यायसम, नष्ट हों अतिचार सब
यद्यपि बने अब मोक्षमार्गी, प्रकट हैं व्यवहार सब।।१२७।।

अब तू निरंतर ध्यानधर, आत्म का कल्याण कर
अवसर मिले तो और को, इस मार्ग में तू साथ कर
भटकेजनों को मार्ग देना, सबसे बड़ा उपकार है
गुमराह करना पथिक को, सबसे बड़ा अपकार है।।१२८।।

पठनकर जिनवाणी का, उसके मरम को जानकर
तू युक्ति से स्थापकर, अनुभवन कर स्वीकार कर
निज बुद्धि का उपयोग करना, न धृष्टता अविचार है
शिवपंथ में स्वविवेक का, उपयोग ही सहकार है।।१२९।।

युक्ति से न युक्त हो, अनुभव से नहीं जो सिद्ध हो
क्यों श्रद्धान दृढता से करे, कोई मनुज तुम ही कहो
दृढता बिना क्या फलित होता, कभी कोई विचार है
दृढता बिना निष्फल रहे, साधक रहे मंझधार है।। १३०।।

उस दृढ अचल विचार का, मंथन निरंतर जो करे
वह जीव ही कुछ काल में, दरश समकित को वरे
संसार उसका कट गया, यह मोक्ष का ही द्वार है
यद्यपि रहे संसार में पर, संसार में ना सार है।। १३१।।

स्थापना अध्यात्म को, अपने विमल श्रद्धान में
अरु जानता संसार को जो यथार्थ के विज्ञान में
शिथिल पड़ती कषायें, बनता विशुद्ध विचार है
आनंद का उन ज्ञानियों के, ना रहे पारावार है।। १३२।।

(क्रमशः)

आखिर हम करें क्या?

3

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

इनमें भी मुख्यरूप से सम्यग्दर्शन की प्राप्ति के लिये या सम्यग्दर्शन प्राप्त होने के बाद चौथे-पाँचवें गुणस्थान में होनेवाले आत्मोन्मुखी भावों को आत्मानुभूति या आत्मानुभव नाम से अभिहित किया जाता है और भावलिंगी सन्तों को प्रत्येक अन्तर्मुहूर्त्त में होनेवाले आत्मोन्मुखी अन्तर्लीन भावों को शुद्धोपयोग या ध्यान नाम से अभिहित किया जाता है।

जिनागम में कहा गया है कि सभी भावलिंगी सन्त हर अन्तर्मुहूर्त्त में छठवें गुणस्थान से सातवें गुणस्थान में और सातवें गुणस्थान से छठवें गुणस्थान में जाते-आते रहते हैं।

उक्त आत्मानुभूति या आत्मध्यान प्राप्त करने के लिये अध्यात्म में रुचि रखने वाले प्रत्येक ज्ञानी-अज्ञानी सभी आत्मार्थी निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। उनको ध्यान में रखकर ही यह विश्लेषण किया जा रहा है।

प्रत्येक आत्मार्थी यह चाहता है कि मुझे इसी भव में देह छूटने के पहिले देह से भिन्न भगवान आत्मा के दर्शन हो जावें, आत्मानुभूति हो जावे, सम्यग्दर्शन की प्राप्ति हो जावे।

न केवल चाहते हैं; अपितु तदर्थ निरन्तर प्रयत्नशील भी रहते हैं। आत्मध्यान के आसनों की अवस्था में बैठकर णमोकार मंत्र आदि मंत्रों का उच्चारण करते हैं, स्तोत्रों का पाठ करते हैं, आत्मा-परमात्मा के बारे में सोचते हैं; और भी उन्हें जो आवश्यक लगता है, करते हैं; पर उनकी यह शिकायत बनी ही रहती है कि हमने तो खूब प्रयत्न किया, पर कुछ हुआ नहीं, आत्मा के दर्शन नहीं हुये, आत्मानुभव नहीं हुआ।

वे निराश हो जाते हैं, उनका उत्साह भंग हो जाता है, वे तनावग्रस्त हो जाते हैं, डिप्रेशन में आ जाते हैं।

ऐसे लोग जब यह सुनते हैं कि ध्यान तो उस स्थिति का नाम है; जिसमें न तो कुछ किया जाता है, न कुछ बोला जाता है और न कुछ सोचा जाता है।

तो वे एकदम किंकर्त्तव्यविमूढ़ हो जाते हैं। उन्हें कुछ नहीं सूझता, कुछ समझ में नहीं आता और वे सोचने लगते हैं कि **आखिर हम करें क्या?** उन्हें उक्त स्थिति से उबारने का यह एक सहज प्रयास है। (क्रमशः)

(पृष्ठ 3 का शेष...)

नहीं है। जैनधर्म के अनुसार मांसाहार और शराब, भाँग, चरस-गांजा आदि तो त्याज्य है ही, परस्त्रीगमन और वैश्यागमन को भी दुर्व्यसन कहकर उसकी घोर निन्दा की है। शराबी और परनारी रत जैनी का जैन समाज में कोई स्थान नहीं होता, ऐसा व्यक्ति सम्पूर्णतया उपेक्षित ही रहता है; इस कारण जैन समाज अधिक समृद्ध है। हाँ, जब भी ये दुर्व्यसन जैनों में आ जायेंगे, वह भी बर्बाद हो जायेगा।

सामाजिक प्रदेय – दान और उदारता के क्षेत्र में भी जैनसमाज सदैव अग्रणी रहा है। यह उदारता भी जैनों ने अपने धर्म और दर्शन से ही सीखी है। आचार्य उमास्वामी का स्पष्ट आदेश है - ''अनुग्रहार्थं स्वस्याति सर्गो दानं' अर्थात् अपने और दूसरों कि भलाई के लिए अपने न्यायोपात्त उपार्जित धन का देना ही सच्चा दान है। आज हम देखते हैं कि हजारों बड़े-बड़े शिक्षा संस्थान, धर्मायतन, औषधालय, छात्रवृत्तियाँ आदि द्वारा अनगिनत लोकोपकारी कार्य जैनसमाज द्वारा सम्पन्न हो रहे हैं। यही सब जैनधर्म का भारतीय समाज को प्रदेय है। मैं अपेक्षा करता हूँ, आशा रखता हूँ कि जैन और जैनेत्तर समाज जैनधर्म को जीवन में अपनाकर इसी तरह अध्यात्म और लोकोपकार के क्षेत्र में अग्रणी रहकर अपना मानव जीवन सार्थक करें। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

7 जून से 6 जुलाई	विदेश	तत्त्वप्रचारार्थ
2 से 11 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
26 अग. से 2 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – **www.vitragvani.com**
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब **vitragvani** एप पर भी उपलब्ध है।

बाल संस्कार शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन (श्री दिगम्बर जैन पोरवाल मंदिर) रामपुरा एवं श्री सीमंधर जिनालय-इन्द्रविहार में श्री दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल के तत्त्वावधान में सम्यक् युवा मण्डल द्वारा दिनांक 16 से 23 जून तक 27वें जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर लगाया गया।

इस अवसर पर पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित देवांशुजी शास्त्री बण्डा, पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित प्रासुकजी शास्त्री सागर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री सागर, पण्डित आदित्यजी शास्त्री पिड़ावा आदि विद्वानों का सान्निध्य प्राप्त हुआ। शिविर में पूजन प्रशिक्षण, शिक्षण कक्षाएं, प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि के माध्यम से अनेक बच्चों ने जैनधर्म के संस्कार ग्रहण किये।

शोक समाचार

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती सुशीलादेवी पाटनी धर्मपत्नी श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी का 83 वर्ष की आयु में दिनांक 12 जून को देहावसान हो गया। आप अत्यंत धार्मिक विचारों वाली महिला थीं, समाजसेवा के कार्यों में भी रुचि लेती थीं। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 1000-1000/- रुपये प्राप्त हुये।

(2) ललितपुर (उ.प्र.) निवासी विदुषी श्रीमती सुमतरानी टडैया धर्मपत्नी स्व. सेठ डालचंदजी टडैया का दिनांक 19 अप्रैल को 96 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1100/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) जयपुर (राज.) निवासी श्रीमती मनकोदेवी धर्मपत्नी श्री नेमीचंदजी गोधा का दिनांक 2 जून को 76 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि श्री नेमीचंदजी टोडरमल स्मारक भवन में विगत 50 वर्षों से अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे हैं।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

धन्यवाद !

जयपुर (राज.)-अनिता कॉलोनी निवासी श्री एम.पी. जैन (सेवानिवृत्त रजिस्ट्रार-राजस्थान विश्वविद्यालय) के जीवन के 90वें वर्ष के अवसर पर वीतराग-विज्ञान एवं जैनपथप्रदर्शक हेतु 2100-2100/- इसप्रकार कुल 4200/- रुपये सुपुत्र मनीष जैन द्वारा प्राप्त हुये; एतदर्थ धन्यवाद!

दशलक्षण महापर्व हेतु सूचना

● दशलक्षण महापर्व के अवसर पर प्रवचनार्थ विद्वानों को बुलाने हेतु पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को आमंत्रण-पत्र समाज/मंदिर/संस्था के लेटर पेड पर शीघ्र भेजें; ताकि समय रहते उचित व्यवस्था की जा सके। पत्र में अपना पूर्ण पता (पिनकोड सहित) एवं फोन नं. (एस.टी.डी. कोड सहित) भेजें एवं तत्काल संपर्क की सुविधा हेतु ई-मेल आई.डी. हो तो अवश्य भेज देवें।

● अनेक बार समाज द्वारा दशलक्षण पर्व के अवसर पर प्रवचन हेतु विद्वानों को अपने यहाँ बुलाने का आमंत्रण अन्तिम समय पर प्राप्त होता है, जिससे व्यवस्था करने में कठिनाई होती है; अत: समाज/मंदिर के व्यवस्थापकों से निवेदन है कि वे अपने यहाँ से आमंत्रण-पत्र तत्काल भिजवायें। संपर्क सूत्र - **दशलक्षण पर्व व्यवस्था विभाग, ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर (राज.) 302015 फोन नं.- 0141-2705581, 2707458, मो. 9785645793 (नीशू जैन)**

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ज्ञानगोष्ठी संपन्न

गजपंथा-नासिक (महा.) : यहाँ देशभूषण कुलभूषण छात्रावास की प्रथम ज्ञानगोष्ठी श्रुतपंचमी महापर्व विषय पर दिनांक 24 जून को संपन्न हुई। गोष्ठी की अध्यक्षता श्रीमती वसुबेन जोबालिया मुम्बई ने की। निर्णायक के रूप में श्रीमती काश्मीराबेन भयाणे, श्रीमती कंचनजी जैन व श्री कुलभूषणजी जैन उपस्थित थे। गोष्ठी में प्रथम स्थान प्रतीक जैन अम्बड ने प्राप्त किया।

गोष्ठी का मंगलाचरण श्रीमती कंचनजी जैन ने एवं संचालन पण्डित शुभमजी शास्त्री ने किया।

प्रकाशन तिथि : 28 जून 2019

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com